टिड्डा

महेश बसेड़िया

एक दिन मुझे अपने दफ्तर के बरामदे में एक टिड्डा (ग्रीन प्रेइंग मेंटिस) दिखा। एकदम शान्त बैठा था वो। मेरे दोस्त ने उसे हथेली पर उठा लिया। मैंने उसकी कुछ तस्वीरें लीं। उसे हम गमले के पौधे पर छोड़कर अपने काम में लग गए। थोडी देर बाद मेरे एक साथी ने आवाज़ दी... "महेश जल्दी अपना कैमरा लेकर आओ।" मैं जल्दी से बरामदे में आया, उस दृश्य को देख कर कुछ पलों तो मैं कैमरा चलाना ही भूल गया।

बरामदे में उसी टिड्डे पर एक चिड़िया हमला करने की कोशिश कर रही थी। और वह अपने शरीर को मोड़कर अगले पैरों से चिड़िया पर आक्रमण कर रहा था। अपने आकार को शायद बड़ा दिखाने के लिए उसने पंख फैला लिए थे। चिड़िया अब उस पर आक्रमण करने का साहस नहीं जुटा पा रही थी। दो-तीन बार झपट्टा मारकर उसे टिड्डे से दूर जाना पड़ा। चिड़िया शायद मेरे वहाँ होने की वजह से भी उड़ गई। मैं सिर्फ एक तस्वीर ले सका। टिड्डा बहुत देर तक उत्तेजित रहा। मैंने ज़रा नज़दीक से कुछ और फोटो खींचे। इस दौरान उसने कैमरे पर भी हमला करने की कोशिश की।

इस नन्हें जीव की दिलेरी से मैं हैरान था।

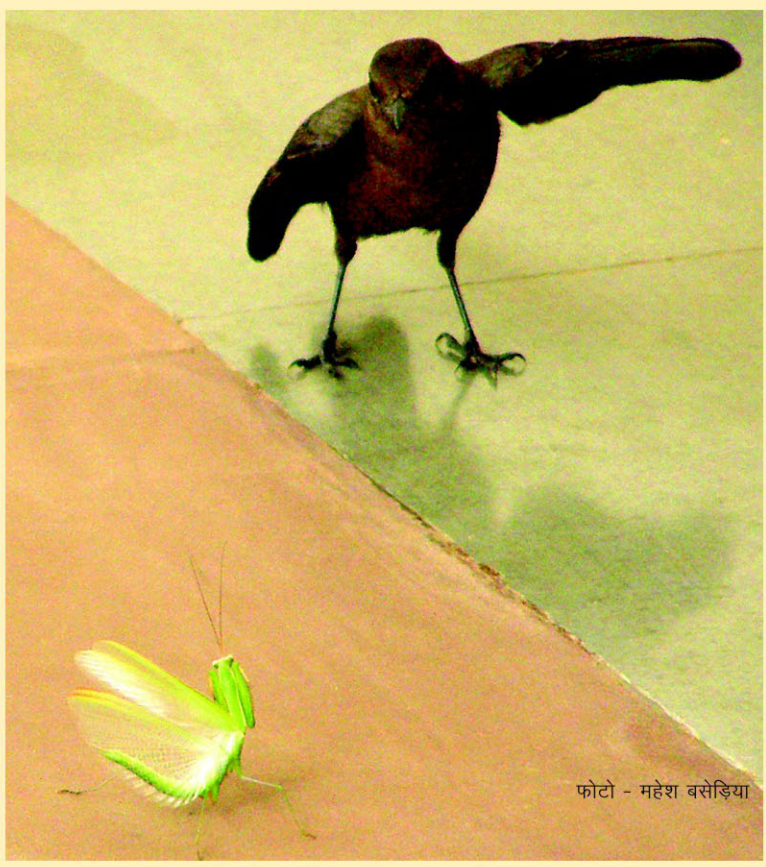

फोटो - महेश बसेड़िया

यह जयपुर की घटना है। ये तीनों फोटो हमें आबिद सुरती के सौजन्य से